SPECIAL ISSUE

THOUGHTS ON EDUCATION

A PEER REVIEWED JOURNAL

Chief Editors :
Prof. Sushma Yadava,
Principal, Shri Rameshwar Das Agarwal Girls PG College,
Navipur Road, Hathras (U.P.)

Mrs. Anamika Singh,
Assistant Professor, Department of Political Science,
Shri [illegible]war Das Agarwal Girls PG College, Navipur Road, Hat[illegible](U.P.)

CONFERENCE NAME
[illegible]ucation and Skill Development:
[illegible] Challenges for Employment in India
21–22 December, 2025

AN INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION & HUMANITIES

APH PUBLISHING CORPORATION

ISSN : 2320-4710

THOUGHTS ON EDUCATION

A Multidisciplinary International Peer Reviewed/Refereed Journal

Vol. XVI, Number - 2 January, 2026

SPECIAL ISSUE

Chief Editors

Prof. Sushma Yadava

Principal,
Shri Rameshwar Das Agarwal Girls PG College, Navipur Road, Hathras (U.P.)

Mrs. Anamika Singh

Assistant Professor, Department of Political Science,
Shri Rameshwar Das Agarwal Girls PG College, Navipur Road, Hathras (U.P.)

CONFERENCE NAME

Higher Education and Skill Development: Prospects and Challenges for Employment in India

21–22 December, 2025

A.P.H. Publishing Corporation
4435–36/7, Ansari Road, Darya Ganj,
New Delhi-110002

CONTENTS

Skill Development in Higher Education: Where Do Arts and Humanities Stand? 1
Anamika Singh

डिजिटल युग में हिंदी और व्यावसायिक कौशल 9
प्रियंका सरोज

व्यावसायिक हिंदी लेखन में रोजगार की संभावनाएं: चुनौतियां एवं समाधान 13
नेहा यादव

स्टार्टअप हेतु एक हब के रूप में उच्च शिक्षा में उद्यमिता और नवाचार 19
रेशमा देवी

Employability Gap in India: Why Degrees Alone are not Enough 25
Prof. Sushma Yadava and Vidhu Agarwal

The Globalization of Entrepreneurship Education: Challenges and Opportunities 31
Prof. Sushma Yadava and Gunjan Agrawal

Skill Enhancement through Vocational Education in India 35
Dr. Richa Yadav

Skill Development through Education : An Indian Perspective 43
Dr. Meenakshi Saxena

Higher Education as a Hub for Innovation and Startups 50
Neelam Kuril

उच्च शिक्षा में कौशल विकास और रोजगार संभावनाएँ 58
डॉ. शिखा

शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम रोजगार और चुनौतियाँ 64
श्रीमती शिखा

शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम रोजगार और चुनौतियाँ

श्रीमती शिखा*

सारांश

शिक्षा किसी राष्ट्र के नब निर्माण एंव प्रगति की आधारशिला होती है शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति का सम्पूर्ण राष्ट्रीय, सामाजिक वैज्ञानिक, सांस्कृतिक व आर्थिक विकास संभव होता है। शिक्षा ही वह दीप है जो मनुष्य की अन्तर्निहित शक्तियों को प्रकाशित करती है। इसके द्वारा देश की समृद्ध प्रतिभा एवं संसाधनों का सर्वोत्तम विकास और सवंर्दृधन व्यक्ति, समाज राष्ट्र और विश्व के हित के लिये किया जाता है।

ज्ञान के परिदृश्य में आज पूरा विश्व तेजी से परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। ऐसे में रोजगार और वैश्विक परिस्थिति में तीव्र गति से परिवर्तनों की वजह से यह जरूरी हो गया है। शिक्षा और रोजगार व्यक्तियों के भविष्य को आकार देने और राष्ट्र के विकास में योगदान देने वाले महत्वपूर्ण पहलू बन गये है। भारत के संदर्भ में, देश की विशाल जनसंख्या और युवाओं की आकांक्षाओं के कारण इन क्षेत्रों का विशेष महत्व है। हांलाकि भारत के सामने यह सुनिश्चित करने में अनूठी चुनौतियाँ है कि रोजगार बाजार में सफल होने के लिये प्रत्येक व्यक्ति आवश्यक कौशल और ज्ञान से पूरी तरह सुसज्जित हो । यह लेख भारत में शिक्षा और रोजगार की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण है तथा चुनौतियों पर चर्चा करके सुधार के अवसरों पर प्रकाश डालता है । यह शोध पत्र भारत में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों (जैसे - 1TEP, B.Ed. D.El.Ed.) की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण भी करता है। 2025 तक शिक्षा स्वरूप नित नयी तकनीको पर व कौशलों पर आधारित हो गया है। यह लेख इस क्षेत्र में उपलब्ध रोजगार के नये अवसरों और शिक्षा संस्थानों के सामने आने वाली संरचनात्मक एवं व्यवहारिक चुनौतियों को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि आज 2026 में शिक्षक शिक्षा केवल डिग्री प्राप्त करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह निरंतर व्यावसायिक विकास (CPD) और तकनीकी दक्षता का मिश्रण बन गई है।

मुख्य शब्द: शिक्षक शिक्षा, रोजगार, स्वीकृत शिक्षक शिक्षा (ITED) एनईपी–2020, चुनौतियाँ

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के नवनिर्माण एंव प्रगति की आधार शिला होती । शिक्षा द्वारा ही राष्ट्रीय सामाजिक, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक एंव आर्थिक विकास संभव है। शिक्षा द्वारा मनुष्य की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास करके उसके व्यवहार का परिर्माजन एंव परिष्करण किया जाता है। जिसके द्वारा देश की समृद्व प्रतिभा एंव संसाधनों का सर्वोत्तम विकास और संवर्धन व्यक्ति समाज, राष्ट्र और विश्व के हित के लिये किया जाता है ।

*असिस्टेण्ट प्रो. (B.Ed.) श्रीमती बी.डी. जैन गर्ल्स, पी.जी. कॉलेज, आगरा

आज ज्ञान के परिदृश्य में पूरा विश्व तेजी से परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। ऐसे में रोजगार और वैश्विक परिस्थिति में तीव्र गति से परिवर्तनों की वजह से यह जरूरी हो गया है। वे सीखाने के साथ-साथ सीखते रहने की कला भी सीखे। इसके लिये शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने हेतु द्विवर्षीय एंव चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की शुरूआत की गयी है। इनके माध्यम से उच्च स्तर की तर्किक एंव नैदानिक क्षमताओं का विकास किया जायेगा। अगले दशक में शिक्षण का भविष्य उज्जवल होगा। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने एंव जीवन पर्यन्त शिक्षा को बढ़ावा दिया जाने का लक्ष्य है।

शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य अच्छे शिक्षक विकसित करना है, जो तर्क संगत विचार एवं चिन्तन के शैक्षिक स्तम्भ हो। जिसमें करुणा, सहानुभूति, साहस, सम्प्रेषण, लचीलापन, वैज्ञानिक चित्तम, कल्पना शक्ति, नवाचारी, और नैतिक मूल्य अन्तर्निहित हो, साथ ही शिक्षक संविधान द्वारा परिकल्पित समावेशी और बहुलतावादी समाज के निर्माण में बेहतर तरीके से योगदान कर सकें|

हमारी आगे आने वाली नयी पीढ़ी को एक सुंदर स्वरूप या आकार देने में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों की अपनी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके लिये बहुविषयक दृष्टिकोण और ज्ञान की आवश्यकता है। जिसके साथ ही साथ एक अच्छे निर्देशक के निर्देशन में मान्यताओं और मूल्यों का निर्माण किया जाता है।

शिक्षक शिक्षा के अन्तर्गत व्यवसायिक शिक्षा के प्रसार में तेजी लाने की आवश्यकता है, जिससे भविष्य में प्रशिणार्थी उनके महत्व संघ कौशल से परिचित हो सकें एवं अपने भावी जीवन के सपनों को पूर्ण कर सकें। नयी शिक्षा नीति 2020 में चार वर्षीच एकीकृत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम को अत्याधिक बढ़ावा दिया गया है। शिक्षण पेशे की प्रतिष्ठा को बहाल करने के लिए एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम क्रियान्वित किये जा रहे है। 2030 तक चार वर्षियत एकीकृत बी०एड० कार्यक्रम स्कूली शिक्षकों के लिए न्यूनतम डिग्री योग्यता बन जायेगा। साथ ही साथ एक समग्र दोहरी दक्षता की बड़ी स्नातक डिग्री होगी। शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम के समान मानकों को बनाये रखने के लिये योग्यता परीक्षण को मानकीकृत किया जायेगा।

वर्तमान में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों की स्थिति

देश में प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिये लगभग 19542 संस्थायें कार्यरत है। देश में शिक्षक जिनमें 25826 पाठ्यक्रम संचालित किये गये है जो शिक्षकों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण प्राप्ति में सहायक होंगें। इसके लिये लगभग 1500000 प्रशिकुओं को प्रशिक्षित किया जा रहा है। चार वर्षीयों में 1 लाख 8000 रुपये चुकाना पड़ता है। जो एक वर्ष के साथ धन की भी बचत करता है एवं दोहरी डिग्री प्रदान करता है। चार वर्षों के अन्तर्गत 33 पेपर होते है। इसके साथ ही साथ प्रयोगात्मक परीक्षाऐं, पाठयोजनायें एवं 21 दिन प्रथम वर्ष में एंव द्वितीय वर्ष में 96 दिन की इन्टर्नशिप भी कभी करायी जाती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीती 2020 में इस कार्यक्रम को अत्यधिक महत्व दिया गया है। इसमें 2.5 लाख ग्राम पंचायतो, 6600 ब्लॉकों, 6000 मु0एल0बी., 676 जिलों से प्राप्त हुये लगभग 2 लाख से ज्यादा सुझावों को सम्मिलित किया गया है।

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्र - शिक्षकों को प्रारंभिक चरण से ही कौशल, बाल- मनोविज्ञान, मूल्य शिक्षा, समावेशी शिक्षा, तकनीकी ज्ञान, बहुभाषी शिक्षण जैसा समकालीन शिक्षण से शुरू करना है (एनसीटीई, 2021) । इसके माध्यम से छात्र - शिक्षक न केवल छात्र - शिक्षक के रूप में विज्ञापित होते हैं, बल्कि वे एक पेशेवर शिक्षक के रूप में विस्तार और आत्मपरकता का भी विकास करते है। एन.ई.पी. 2020 यह भी स्पष्ट करता है कि शिक्षक शिक्षा ही नही, बल्कि नैतिक, समाजिक और सांस्कृतिक रूप से भी जागरुकता होनी चाहिए आईटीईपी इसी दृष्टिकोण को मूर्त रूप देने का प्रयास है । यह कार्यक्रम विद्यार्थियों को केवल शैक्षणिक निर्माण का प्रशिक्षण ही नही देता है, वरन उन्हें 21वीं सदी के ऐसे इंस्टीट्यूट के रूप में तैयार करता है, जो नवाचार, आलोचनात्मक शिक्षा, सहानुभूति और डिजिटल शिक्षण से युक्त हो (यूनेस्को 2015) । इस प्रकार ITEP न केवल एक शिक्षण कार्यक्रम है, बल्कि यह शिक्षा प्रणाली में गुणात्मक परिवर्तन लाने की दिशा में एक प्रारम्भ है। यह अध्ययन इस कार्यक्रम के विविध उत्कृष्टता एवं यर्थाथ परक बिबरणों की गहन समीक्षा करता है, जिससे इसकी विशिष्टताऐं और वास्तुशिल्प अध्ययन प्रस्तुत किये जाते है ।

'शिक्षा और रोजगार' के बीच संबन्ध का वैचारिक ढाँचा

शिक्षा और रोजगार के बीच संबंध स्वाभाविक रूप से जटिल है, जो कई सैद्धान्तिक और अनुभव अन्य कारकों की परस्पर क्रिया से आकार लेता है। आज अनेक अध्ययनों ने रोजगार परिणामों पर शैक्षिक उपलब्धि की संभावनाओं में वृद्धि बेहतर नौकरी की गुणवत्ता, उच्च आय और श्रम बाजार में बेहतर अवसरों और परिणामों से जुड़ा है। ऐसा इसलिये है क्योंकि शिक्षा व्यक्तियों को वह ज्ञान, कौशल और प्रमाण पत्र प्रदान करती है जिनकी श्रम बाजार में अत्याधिक मांग है और शिक्षा और रोजगार के बीच

जटिल अंर्तसंबंध को समझना आर्थिक और सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रभावी नीतियों और कार्यक्रमों को तैयार करने के लिये महत्वपूर्ण है।

मौजूदा साहित्य से पता चलता है कि शिक्षा और रोजगार के बीच संबंध सीधा नही है, और कई कारक इस गतिशीलता को प्रभावित कर सकते है, उदाहरण के लिए, अधिक प्रभावी प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए शिक्षित व्यक्तियों का चयन उनकी उच्च व्यक्तियों का चयन उनकी उच्च रोजगार क्षमता में योगदान दे सकता है, न कि स्वयं शिक्षा । इसके अतिरिक्त, शैक्षिक प्रक्रिया, जिसमें सूचना निर्माण, शिक्षण सुधार और शैक्षणिक संस्थानों द्वारा प्रदान किया गया रोजगार मार्गदर्शन शामिल है, छात्र के रोजगार परिणामों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती है। सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से मानव पूंजी सिद्धान्त बताता है कि शिक्षा व्यक्तिगत उत्पादकता और रोजगार क्षमता को बढाती है, जबकि संकेतन सिद्धान्त यह मानता है कि शैक्षिक योग्यताये नियोक्ताओं के लिये उम्मीदवार के गुणों के संकेतक के रूप में कार्य करती है सामाजिक पूँजी सिद्धात रोजगार तक पहुंच को सुगम बनाने में नेटवर्क और संबधो की भूमिका पर और जोर देता है ।

ये परिप्रेक्ष्य कौशल बेमेल सिद्धान्त और सामाजिक पुनरूपादन सिद्धात जैसे ढांचों के साथ इस बात पर बल देते हैं कि रोजगार पर शिक्षा का प्रभाव केवल कारण प्रभाव के सरल समीकरणों तक सीमित नहीं है। यह शैक्षिक

परिणामों और श्रम बाजार की माँगो के बीच सामंजस्य, शिक्षा की गुणवत्ता और सुलभता और व्यापक सामाजिक-आर्थिक संदर्भों से प्रभावित होता है

इस बहुआयामी संबन्ध को बेहतर ढंग से समझने के लिये, हमने दोहरे कार्यप्रणालीगत दृष्टिकोण पर आधारित एक वैचारिक ढाँचा विकसित किया। सर्वप्रथम हमने प्रमुख सैद्धांतिक भाडलों का विषयगत संश्लेषण किया, जिनमें मानव पूंजी सिद्धांत, संकेतन सिद्धान्त, सामाजिक पूंजी सिद्धान्त, कौशल सिद्धान्त आदि शामिल हैं।

शिक्षा और रोजगार के बीच संबन्ध पर सिद्धांत

शिक्षा और रोजगार के बीच संबन्ध का अध्ययन विभिन सैद्धान्तिक दृष्टिकोणो से किया गया है, जो इस संबन्ध के अन्तर्निहित तंत्रों के लिये अलग-अलग व्याख्यायें प्रस्तुत करते है।

- **मानव पूंजी सिद्धान्त है**– मानव पूँजी सिद्धान्त, यह मानता है कि शिक्षा और प्रशिक्षण में निवेश करने से व्यक्ति की उत्पादक क्षमता बढ़ती है, जिससे उसकी कमाई की क्षमता और रोजगार योग्यता में वृद्धि होती है। इस ढाँचे के भीतर, मानव पूंजी सिद्धांत इस बात पर जोर देता है कि व्यक्ति भविष्य को कमाई और करियर की संभावनाओं के सन्दर्भ में अपेक्षित प्रतिफल के आधार पर अपनी शिक्षा में निवेश करने के लिये तर्कसंगत निर्णय लेते है। यह सिद्धान्त शिक्षा और रोजगार के बीच संबन्ध को समझाने वाला सबसे व्यापक रूप से स्वीकृत ढाँचा है।
- **संकेतन सिद्धान्त**– यह सिद्धात शिक्षा और रोजगार के बीच संबंध, वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। यह तर्क देता है कि शिक्षा नियोक्ताओं के लिये एक संकेत के रूप में कार्य करती है, जो किसी उम्मीदवार की क्षमताओं, कार्यनैतिकता और अनुकूलशीलता को दर्शाती है। किसी अन्य रूप में इसे नियोक्ता भर्ती प्रक्रिया में शैक्षिक प्रमाण पत्रों का उपयोग एक फिल्टरिंग तंत्र के रूप करते है। यदि उच्च स्तर की शिक्षा बेहतर कार्य प्रदर्शन से संबन्धित है। सिग्नलिंग सिद्धान्त बताता है कि शिक्षा नियोक्ताओं को किसी व्यक्ति की क्षमताओं और उत्पादकता के बारे में संकेत देती है, न कि सीधे उनके मानव पूंजी को बढ़ाती है।
- **सामाजिक पूंजी सिद्धान्त**– यह सिद्धांत शिक्षा और रोजगार के बीच संबंध को आकार देने में सामाजिक नेटवर्क और रिश्तों की भूमिका पर जोर देता है। यह बताता है कि मजबूत सामाजिक नेटवर्क और कनेक्शन वाले व्यक्तियों के बेहतर रोजगार परिणाम होने की अधिक संभावना होती है, क्योंकि वे नौकरी के अवसरों और संसाधनों तक पहुँचने के लिये कनेक्शनों का लाभ उठा सकते हैं। इस परिप्रेक्ष्य के अनुसार, किसी व्यक्ति की शिक्षा का मूल्य केवल उसकी अकादमिक योग्यताओं से ही निर्धारित नहीं होता है, बल्कि उसके शैक्षिक और व्यावसायिक अनुभवों के माध्यम से अर्जित सामाजिक पूंजी से भी निर्धारित होता है।

संक्षेप में हम कह सकते है कि यह तीन प्रमुख सिद्धान्त मानव पूंजी सिद्धान्त, संकेत सिद्धान्त और सामाजिक पूंजी सिद्धान्त - शिक्षा और रोजगार के बीच जटिल संबन्ध पर दृष्टिकोण प्रदान करते है। अनुभव आधारित साक्ष्यों से यह ज्ञात होता है कि यह तीनो तत्व सक्रिय है और प्रत्येक का सापेक्षिक महत्व विशिष्ट सन्दर्भ और श्रम बाजार की स्थितियों के आधार पर भिन्न होता है।

- **कौशल बेमेल सिद्धान्त**– यह सिद्धान्त बताता है कि शिक्षा और रोजगार के बीच संमबन्ध हमेशा सीधा नहीं होता, क्योंकि शिक्षा के माध्यम से प्राप्त कौल और योग्यताओं तथा श्रम बाजार द्वारा माँगे गये कौशलों के बीच एक अंसगति हो सकती है, यह सिद्धान्त भानता है कि कौशल बेमेल तब हो सकता है जब व्यक्तियों के कौशल और योग्यतयें नियोक्ताओं की आवश्यकता के अनुरूप न हों, जिससे अल्प - रोजगार, नौकरी से असन्तोष और प्रतिकूल आर्थिक परिणाम हो सकते हैं।

यह सिद्धान्त तर्क देता है कि अत्याधिक शिक्षा जहाँ व्यक्तियों के पास नौकरी के लिये आवश्यक से अधिक शैक्षणिक योग्यता होती है, कौशल अल्पउपयोग और संभावित रूप से कम उत्पादकता का कारण बन सकती है। इसके विपरीत अल्प शिक्षा जहाँ व्यक्तियों के पास नौकरी के लिये आवश्यक से कम शैक्षणिक योग्यता होती है, कौशल अंतराल और नौकरी के प्रदर्शन में कमी का कारण बन सकती है

रोजगार के अवसर

शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में 2025-26 के परिदृश्य में रोजगार के कुछ प्रमुख क्षेत्र निम्न है -

- **एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (ITEP) :** 12वीं के बाद सीधे 4 वर्षीय ITEP कोर्स करने वाले युवाओं के लिये प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में प्राथमिकता के आधार पर रोजगार अलब्ध है।
- **डिजिटल और हाइब्रिड शिक्षण :** एड - टेक कंपनियों (BYJU'S - Unacademy) आदि के साथ-साथ अथ पारंपरिक स्कूल भी हाइब्रिड मॉडल अपना रहे है।
- **विशेष शिक्षा और परामर्श :** समावेशी शिक्षा के तहत विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिये शिक्षकों और कैरियर काउंर्लस के पदों में वृद्धि हुयी है।
- **सरकारी क्षेत्र :** केन्द्रीय विद्यालय (KVS) नवोदय विद्यालय (NVS) और विभिन्न राज्य बोर्ड में शिक्षकों को भारी माँग।

चुनौतियाँ

भारत विश्व की सबसे बड़ी शिक्षा प्रणालियों में से एक है, जिसमें देशभर में लाखों छात्रों को शिक्षा प्रदान करने वाले विविध प्रकार के शिक्षण संस्थान मौजूद हैं। हालांकि हाल के वर्षों में महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद भारतीय शिक्षा प्रणाली कई चुनौतियों का सामना कर रही है, जिनका समाधान यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक छात्र को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त हो।

आज हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक शिक्षा की गुणवत्ता है। अभी फिलहाल के वर्षों में महत्वपूर्ण सुधारों के बावजूद, कई स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में अभी भी पर्याप्त बुनियादी ढांचा, योग्य शिक्षक और अद्यतन पाठ्यक्रम का अभाव है। इन चुनौतियों को हम निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से अच्छे से समझ सकते हैं-

गुणवत्ता और प्रशिक्षण :- कई कार्यक्रमों में सैद्धांतिक ज्ञान पर अधिक जोर होता है, जबकि व्यावहारिक और आलोचनात्मक सोच का अभाव होता है, जिससे शिक्षक वास्तविक कक्षा में चुनौतियों का सामना नहीं कर पाते हैं।

संसाधनों की कमी :- अपर्याप्त बुनियादी ढांचा, योग्य शिक्षक प्रशिक्षकों की कमी, और वित्तीय बाधाएं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में बाधा डालती हैं।

रोजगार की समस्या :- आज बडी संख्या में छात्र शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों से निकलने के बाद भी, शिक्षा विभाग में रिक्तियां कम होने के कारण लंबे समय तक नौकरी मिलना मुश्किल हो जाता है, जिससे माँग और आपूर्ति में अंतर आता है।

NEP 2020 का कार्यान्वयन :- नई शिक्षा नीति के तहत चार वर्षीय बी.एड. जैसे बदलावों को लागू करने में प्रशासनिक और वित्तीय चुनौतियाँ हैं, और योग्य शिक्षकों की कमी महसूस होती है।

पाठ्यक्रम और व्यावसायिकता :- पाठ्यक्रम का आधुनिक न होना और आज भी पारम्परिक तरीके से शिक्षा प्रदान करना, रचनात्मकता और नवाचार की कमी, और शिक्षकों में व्यावसायिक परिपक्वता की कमी भी प्रमुख मुद्दे हैं।

डिजिटल डिवाइड :- शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच प्रौद्योगिकी, गैजेट्स और इंटरनेट तक पहुँच में अंतर डिजिटल शिक्षा को लागू करने में भी एक बड़ी चुनौती है।

हालाँकि आज एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (ITEP) शिक्षकों के समग्र विकास और शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने की दिशा में एक प्रभावशाली प्रयास है, फिर भी इसके प्रभावी कार्यान्वयन में कई व्यवहारिक समस्याएँ और चुनौतियाँ सामने आती हैं। यह कार्यक्रम जहाँ एक ओर विषय और शिक्षण प्रशिक्षण का समन्वय प्रस्तुत करता है, वहीं दूसरी ओर इसके लिये आवश्यक संसाधनों, प्रशिक्षित संकाय और छात्रों की प्रतिबद्धता जैसी बुनियादी शर्तों की पूर्ति करना भी एक सबसे बड़ी चुनौती है। भारत जैसे विविधतापूर्ण और संघीय ढांचे वाले देश में इसे समान रूप से लागू करना भी सहज नहीं है। जैसे- इसमें प्रवेश स्तर पर काफी अस्पष्टता है क्योंकि इस कार्यक्रम (ITEP) में प्रवेश कक्षा - 12 के पश्चात ही लिया जाता है। जिससे छात्र आरम्भ से ही शिक्षकीय पेशे की दिशा में आगे बढ़ सकें। किन्तु व्यावहारिक रूप से देखा गया है कि इस आयु में अधिकांश विद्यार्थी करियर को लेकर पूर्णतः स्पष्ट नहीं होते हैं। कई बार वे सामाजिक व पारिवारिक दबाव, सीमित विकल्प, या जानकारी के अभाव में शिक्षक बनने का निर्णय ले लेते हैं। इस स्थिति में वे प्रशिक्षण तो ले लेते हैं, किन्तु उनमें अपेक्षित प्रतिबद्धता, लक्ष्यबोध एवं मानसिक तैयारी की कमी बनी रहती है। अतः प्रवेश से पूर्व छात्रों के लिये करियर परामर्श अभिरुचि परीक्षण और शिक्षकीय उपयुक्तता का मूल्यांकन अनिवार्य क्रिया जाना चाहिये।

निष्कर्ष

इस शोध पत्र के अध्ययन द्वारा यह समझा जा सकता है कि शिक्षक शिक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन करना एक महत्वपूर्ण नवाचार उपलब्धि है। इस संशोधन के द्वारा न केवल शिक्षा का क्षेत्र उच्च होगा वरन शिक्षक का भी गुणात्मक विकास होगा। शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति एवं शिक्षण कौशल में विकास के लिये द्वि-वर्षीय एवं चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक शिक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम एक अच्छा निर्णय है। क्योंकि इससे छात्रों को शुरुआत से ही अपने भविष्य के लिये एक रास्ता बन जाता है क्योंकि छात्रों के रोजगार के लिये इधर उधर भटकना नहीं पड़ता है वे शिक्षा में ही अपना व्यवसायी करण देखने लगते है। क्योंकि शिक्षा और रोजगार के बीच संबंध जटिल और

बहुआयामी है, जिसका व्यक्तियों, अर्थव्यवस्थाओं और समाजों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। इस संबंध का विभिन्न सैद्धान्तिक दृष्टिकोणों से अध्ययन किया गया है जो इस जुड़ाव के अन्तर्निहित तत्वों के लिये अलग-अलग व्याख्यायें प्रस्तुत करते हैं, लेकिन संबंधित साहित्य में सबसे अधिक प्रचलित सिद्धांत मानव पूँजी सिद्धांत, संकेतन सिद्धान्त और सामाजिक पूँजी सिद्धांत है।

नीति निर्माताओं को श्रम बाजार की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में निवेश को प्राथमिकता देनी चाहिए, जो सामान्य और व्यवसायिक कौशल विकास को बढ़ावा दें और शैक्षणिक संस्थानों तथा नियोक्ताओं के बीच घनिष्ठ सहयोग को प्रोत्साहित करें।

NEP 2020 द्वारा सुझाये गये डिजिटल साक्षरता, समावेशी दृष्टिकोण, आलोचनात्मक सोच और नैतिक मूल्यों जैसे 21वीं सदी के शिक्षण तत्वों को ITEP में समाहित किया गया है। हालांकि इसके कार्यान्वयन में योग्य प्रशिक्षकों की कमी, संसाधनों की अनुपलब्धता, पाठ्यक्रम का भार और राज्यों में असमान कार्यान्वयन जैसी गंभीर चुनौतियाँ हैं। इनका समाधान किये बिना इस कार्यक्रम की पूर्ण सफलता संभव नहीं है। यदि नीति-निर्माताओं, संस्थानों और शिक्षकों द्वारा समन्वित प्रयास किये जाएँ, तो भारतीय शिक्षक प्रणाली को वैश्विक मानकों के समकक्ष लाने में सक्षम हो सकता है। यह न केवल शिक्षा की गुणवत्ता बढाएगा, बल्कि एक समावेशी, नैतिक और उत्तरदायी समाज की स्थापना में भी सहायक सिद्ध होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अरोरा, संतोष, इन्फॉर्मेशन टेक्नालॉजी एण्ड टीचर एजुकेशन।
- जैन, शुद्धात्य प्रकाशय नवाचार के युग के शिक्षक कैसे हों।
- श्रीमाली, ललितय ; भूमण्डलीकरण और अध्यापक शिक्षा।
- चन्द्र भूषण गिरि (2024) एकीकृत बी. एड. कार्यक्रम के छात्र शिक्षकों के लिये शिक्षण अभ्यासः मुद्दे, दुविधाएं और सुझाव, सी. एम. आर. विश्वविद्यालय बेंगलोर, ई- प्रकाशन।
- डी ब्रुईन, ए; डुपिस, ए. रोजगार क्षमता को 'काम' में लाना। जे. इंटर डिसिप्लिनरी इकोनॉमिक्स, 2008, 19, 339–419 (गूगल स्कॉलर) (क्रॉसरेफ)
- हार्बिसन, एफ. एचय मायर्स, सी. ए. नवनिकसित अर्थव्यवस्थाओं में शिक्षा और रोजगार। कंप. एजु. रेव. 1964, 8, 5-10 (गूगल स्कॉलर) (क्रॉसरेफ)
- चन्द्र भूषण गिरि (2024) टीचिंग प्रैक्टिस फॉर स्टुडेंट टीचर ऑफ इंटीग्रेटेड बी.एड. प्रोग्रामः इश्यू, प्रेडिकमेन्ट्स एण्ड सजेशन, CMR यूनिवर्सिटी, बेंगलोर, E पब्लिकेशन।